बिचारा

जैनेंद्र कुमार

अनुवाद

हेमा जावडेकर

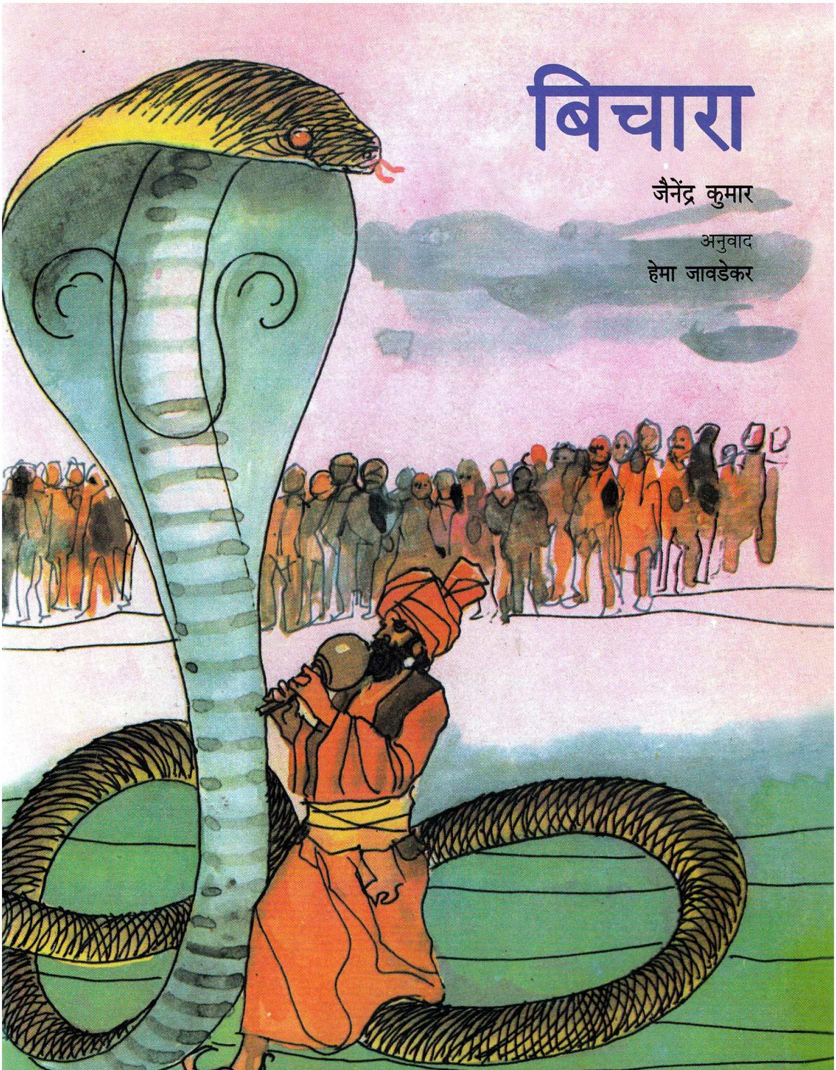

ISBN 978-81-237-0613-9

प्रथम प्रकाशन : 1992 *(शके* 1913)
पहिली आवृत्ती : 1994 *(शके* 1915)
दुसरी आवृत्ती : 1995 *(शके* 1917)
तिसरी आवृत्ती : 2004 *(शके* 1926)
चौथी सुधारीत आवृत्ती : 2004 *(शके* 1926)
पाचवी आवृत्ती : 2013 *(शके* 1934)

मराठी अनुवाद © नॅशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

Vah Bechara *(Marathi)*

₹ 35.00

संचालक, नॅशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
नेहरू भवन, 5 इन्स्टिट्युशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नवी दिल्ली-110 070 यांनी प्रकाशित केले.

नवसाक्षर साहित्यमाला

बिचारा

जैनेंद्र कुमार

अनुवाद

हेमा जावडेकर

एकः सूते सकलम्
NBT INDIA

नॅशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

गरीब आदमी

एक घने जंगल में एक साँप रहता था। वह बहुत ही भयानक था। लेकिन

दिखने में बहुत सुंदर था। जंगल के दूसरे जानवर उससे डरते थे। साथ ही, उसकी तरफ एक खास आकर्षण भी था। उसका काला शरीर ऐसा था जैसे उसे तराशा गया हो। और उसके पंजे ऐसे थे जैसे उनमें रत्न जड़े हों। यह साँप ज़हरीला था, लेकिन उसका दिल बहुत अच्छा था। जब वह गुस्से में दहाड़ता था,

बिचारा

एका घनदाट अरण्यात एक नाग राहत होता. तो अगदी अक्राळविक्राळ होता. पण दिसायला अतिशय सुंदर होता. जंगलातील इतर प्राण्यांना त्याची भीती वाटत असे. तसेच, त्याच्याबाबत एक आकर्षणही वाटत असे. त्याच्या काळ्याभोर देहावर जणू नक्षीकाम केले होते. अन् फणीवर जणू रत्ने जडविलेली होती. हा विषारी नाग होता, पण तो मनाने फार चांगला होता. तो रागाने फणफणला की

त्याच्या उष्ण उच्छ्वासाने आसपासचे गवतसुद्धा जळून जात असे. एरवी तो आपल्या जागेवर निमूट पडून राहत असे. अशावेळी किडे मुंग्याही अगदी सहजपणे त्याच्या शरीराशी खेळत असत.

उसकी गर्म सांसें उसके आस-पास की घास को भी जला देती थीं। कभी-कभी वह अपनी जगह पर बिना हिले-डुले पड़ा रहता था। उस समय कीड़े-मकोड़े और चींटियां भी आसानी से उसके शरीर से खेलते थे।

एक दिन, अचानक, स्वर्ग से एक बच्चा उस जंगल में आया, खेलता-कूदता हुआ। वह खुशी-खुशी हंस रहा था। उसके दिल में खुशी के झरने नाच रहे थे। उसे कोई डर नहीं था। बच्चा इतना सुंदर था, मैं क्या कहूँ!

6

उसके हाथ में बांसुरी थी। वह उसे बजाते हुए चल रहा था। भगवान ही जाने इस घने जंगल में यह बच्चा कहां से आ गया।

बच्चा खेल में मग्न था। खेलते-खेलते उसका पैर साँप की पूंछ पर पड़ गया। तुरंत साँप ने बच्चे के पैर में काट लिया।

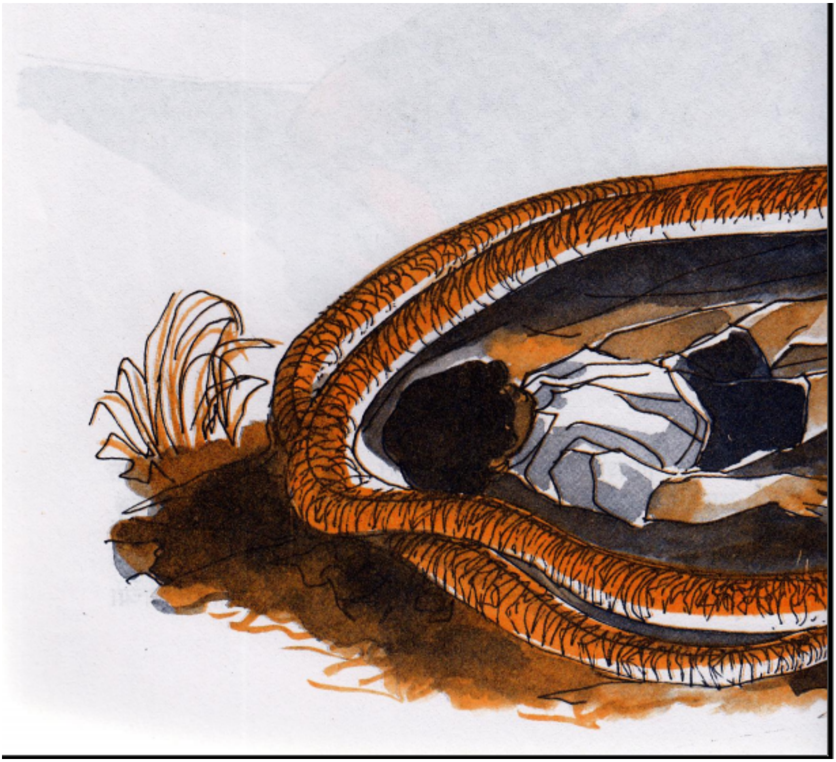

7

साँप के ज़हर का असर ऐसा हुआ कि बच्चा वहीं गिर पड़ा। आँखें झपकते

ही उसका शरीर ठंडा पड़ गया। उसके मुँह से एक कराह भी नहीं निकली। ऐसा लगा जैसे वह हँसते-हँसते गिर पड़ा हो! उसका मुँह भी नहीं हिला था।

साँप ने गिरे हुए बच्चे को देखा। उसे बहुत बुरा लगा।

साँप बच्चे के रूप-रंग को देखकर बहुत मोहित हो गया। बच्चे के चेहरे पर साँप के प्रति कोई द्वेष या शिकायत नहीं थी। साँप को बहुत बुरा लगा। वह बच्चे के चारों ओर घेरा बनाकर उसकी रखवाली करने लगा।

दिन बीता, रात भी बीती, दो दिन बीते। तीन तीन हो गए, तीन चार हो गए। लेकिन साँप को अब अपने शरीर का होश नहीं था। वह बच्चे के चारों

ओर घेरा बनाकर बैठा रहा। आखिर में, बच्चे के शरीर से बदबू आने लगी। साँप को एहसास हुआ कि बच्चे की आत्मा अब उसके शरीर में नहीं है। फिर साँप वहाँ से चला गया। उसने बहुत दुख के साथ भगवान से प्रार्थना की, "हे भगवान, मैं क्या करूँ? मैं अपने गुस्से पर काबू नहीं रख पा रहा हूँ। मैं मानता हूँ। लेकिन मुझे किसी के नुकसान की चिंता नहीं है। आपने मेरे मुँह में यह कैसा बेरहम ज़हर डाल दिया है? जैसे ही मैं किसी को छूता, उसकी जान निकल जाती। मुझे इस भगवान जैसे बच्चे की थोड़ी चिंता थी।

10

मैंक्या करूँ ? हे भगवान, तुमने मुझे जो ज़हर दिया है, उसे वापस ले लो। काश! काश! अगर मैं खुद को गुस्से से नहीं बचा सकता, तो कम से कम मैं किसी और की जान तो नहीं लूंगा, है ना? कम से कम मैं उस पाप से

तो बच जाऊंगा। लेकिन तुमने मेरे मुंह में महाकाल को स्थापित किया है। इस ज़हर को मेरे मुंह से निकाल दो।”

11

अगले दिन, भगवान का भेजा हुआ एक सपेरा वहाँ से जा रहा था। उसके हाथ में एक थैला था। वह जंगल में आया और पुंगी बजाने लगा। पुंगी की आवाज़ से साँप खिंचा चला आया। बस ऐसे ही, वह सपेरा के सामने आ गया और मंत्रमुग्ध होकर वहीं खड़ा हो गया। जैसे ही सपेरा पुंगी बजा रहा था, साँप झूम रहा था। पुंगी साँप के सामने बजती रही, और साँप बेहोश होकर सपेरा के पास गिर गया ।

12

धीरे-धीरे सपेरा ने उसे प्रेम से वश में कर लिया।

जब सपेरा ने अपने ज़हरीले दांत मुंह से निकाले तो सांप बेहोश हो गया।

इस असहनीय दर्द में भी वह बार-बार सपेरा को धन्यवाद देता रहा। चाहे उसे कितना भी दर्द, तकलीफ़ और तकलीफ़ हो, वह सपेरा को इस बात के लिए धन्यवाद दे रहा था कि यह आदमी उसका ज़हर निकाल रहा था। आखिर में सांप बेहोश हो गया। सपेरा ने सांप को अपने थैले में रखा और शहर की ओर चल पड़ा।

जब साँप को होश आया, तो उसने अपने चारों ओर अंधेरा देखा। वह चारों तरफ से घिरा हुआ था। बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं था। उसने अपने शरीर को ज़ोर-ज़ोर से पटककर बाहर निकलने का रास्ता खोजने की कोशिश की। लेकिन चारों तरफ से मार खाने के बाद वह पड़ा रहा । उसे एहसास हुआ कि सारे रास्ते बंद हो गए थे। ऊपर नीला आसमान नहीं था, लेकिन उसके पीछे वही घना अंधेरा था। उसे यह भी एहसास हुआ कि जो चीज़ उसे घेरे हुए थी, वह बहुत मज़बूत थी। वह कभी बाहर नहीं आ पाएगा ।

सपेरे ने अपना बैग उठा लिया और शहर में काम के लिए निकलपड़ा।

13

उसने वहाँ पुंगी बाजाने, अपनी सपेरे वाली कला दिखाने और अनाज,

पैसा जमा करने और अपनी रोटी कमाने का फैसला किया।

वो साँप का खेल बच्चों को दिखाएगा । उन्हें साँप को देखने में बहुत उत्सुकता और दिलचस्पी होगी। वे साँप से डरेंगे भी। लेकिन जब सपेरा पास होगा, तो वे ज़्यादा नहीं डरेंगे। वे साँप को पत्थर मारकर भी डराएँगे। अगर वे साँप को थोड़ा ज़्यादा डरा देंगे तो क्या होगा? साँप की पूंछ बच्चों को बहुत अजीब लगेगी। यह तस्वीर में साँप की पूंछ से कहीं ज़्यादा हैरान करने वाली होगी! असली साँप को देखकर भी उन्हें तसल्ली होगी। लेकिन बच्चे कागज़ के साँप से नहीं डरते। वे सिर्फ़ हैरान होते हैं। उन्हें इस साँप के बारे में भी ऐसा ही लगेगा।

खेल शुरू हुआ और डिब्बे का ढक्कन खोला गया। साँप को लगा कि उसके सिर पर रोशनी पड़ गई है। उसने खुशी-खुशी अपना फन उतारा और ऊपर चढ़ गया। सामने उसने अपने उपकारक सपेरे को पुंगी बजाते देखा। तो आप क्या पूछते हैं? साँप ने अपना फन फैलाया और झूमने लगा। वह अपने उपकारक के सामने हैरान खड़ा पुंगी की बातें सुन रहा था।

16

सही समय पर सपेरा ने अपने हाथ से सांप को पिंजरे से बाहर निकाला। फिर उसने उसे ज़मीन पर छोड़ दिया। लोगों ने उसे घेर लिया।

17

साँप ने सब को देखा। उसने छोटे बच्चों को भी देखा - उसे नहीं पता था कि वे क्या चाहते हैं। हम एक छोटे, हिंसक जानवर हैं। फिर ये लोग, खुशाल, इतने पास क्यों खड़े हैं?

अचानक, वह हिचकिचाते हुए ज़मीन पर आ गया। वह लोगों से घिरा हुआ, लंगड़ाकर गिर गया।

लोगों को साँप का चमकदार, मुलायम शरीर बहुत पसंद आया।

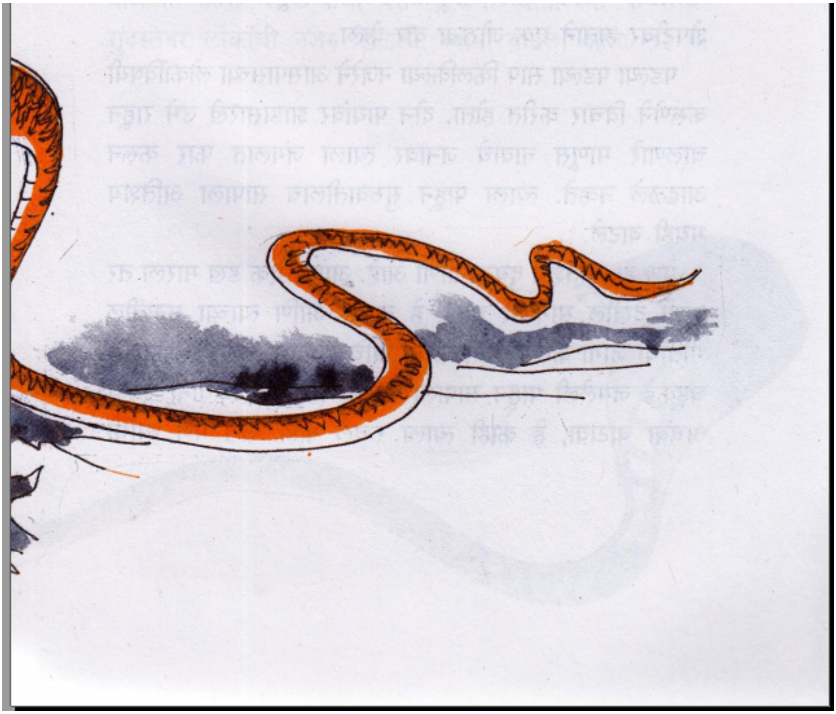

18

आह, क्या लोगों ने कभी इतना बड़ा, भारी साँप देखा है? इतना डरावना साँप, जंगल का राजा! लोग उसे इस तरह मुड़ा हुआ, अपना चेहरा छिपाए हुए देखकर बहुत खुश हुए।

एक ने कहा, “सपेरा , इसे उठाओ और चलो देखते हैं।” सपेरे ने कहा,

“साहेब, यह साँप अभी नया है, अभी भी रेंग रहा है,” एक लड़के ने कहा, “मुझे दिखाओ, सपेरे बुवा।” सपेरे ने कहा, “ठीक है, बाबूजी।” यह कहकर, उसने साँप की पूंछ पर हाथ से ज़ोर से मारा।

साँप आँखें खोलकर अपने आस-पास के लोगों के बारे में सोच रहा था। उसने जंगल में कभी इंसान नाम का कोई जीव दो पैरों पर खड़ा और पेड़ की तरह चलता हुआ नहीं देखा था। पहले तो साँप उससे बहुत डरता था।

लेकिन यह बहुत कमज़ोर जानवर है। उसे एहसास हुआ कि अगर उसे डंक मार दिया गया, तो वह पानी भी नहीं मांगेगा, और उसके दिल में डर की जगह दया ने ले ली। अपने आस-पास जमा हुए उन अजीब और कम समय तक रहने वाले लोगों को देखकर, साँप पहले तो डर गया। उसे यह बात पसंद नहीं आई कि वे इतने हैरान थे। हालाँकि,

उसे प्यार पसंद था। लेकिन उसे इतने सारे लोगों का ध्यान अपनी ओर खींचना पसंद नहीं था। वह इन अजनबियों से बचकर जंगल में भाग जाना चाहता था। लेकिन रास्ता कहाँ था?

उसी समय पूंछ पर वार हुआ। वह फुफकारा। उसने अपना फना निकाला। फिर वह अपना फन फैलाकर भाग गया। उसने तुरंत हमलावर की तरफ देखा। लेकिन सपेरा एक पुंगी से खेल रहा था। सांप अपना फना फैलाए खड़ा था। लोगों की नज़रें उन फनों की खूबसूरती पर टिक गईं। उन्होंने सोचा,

खूबसूरती में सिर्फ़ मज़ा है, डर नहीं। साँप ने अपने उठे हुए फन को चारों तरफ़ घुमाते हुए सब कुछ देखा । उसे एहसास हुआ कि उसे लोगों पर कोई गुस्सा नहीं है। लोगों के चेहरों पर भी उसके लिए प्यार दिख रहा था। साँप ने गुस्से से देखा कि बच्चे भी उससे बिल्कुल नहीं डरते। उसने गुस्से से कहा

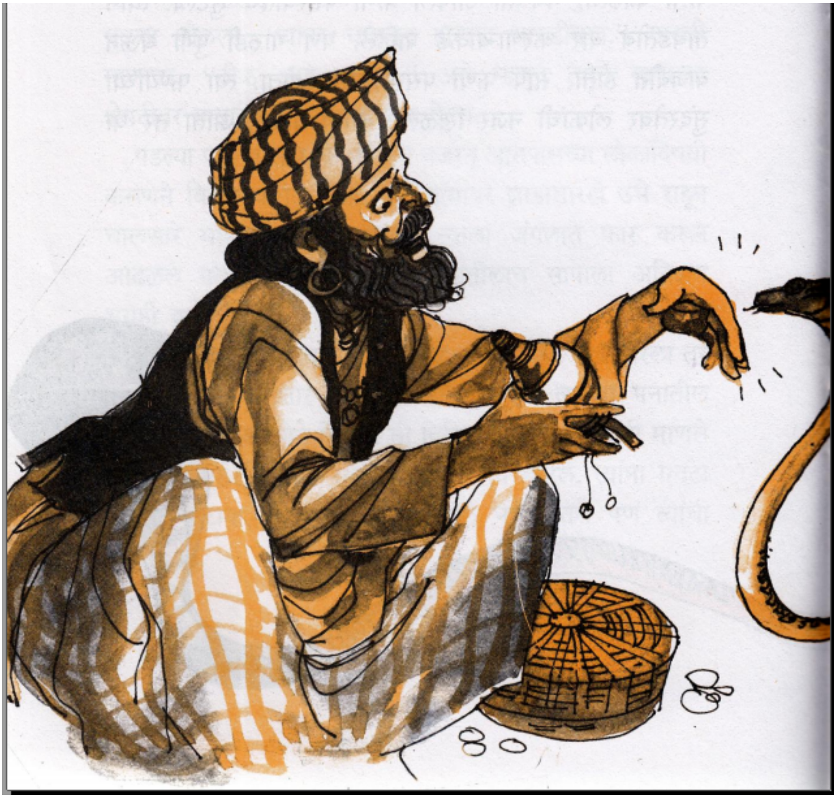

21

वह फुफकारा। इन हरकतों से वह किसी और को डरा देता। लोगों की दिलचस्पी और बढ़ गई। वे खुशी से साँप का खेल देखते रहे।

22

साँप अपने फन जितना फैला सकता था, फैलाता रहा! वह अपने फन फैलाता रहा। उस साँप के फन पारसनाथ (जैन धर्म के तेईसवें तीर्थंकर) की मूर्ति के पंखों जैसे लग रहे थे। उसके फन ऊपर और ऊपर उठते जा रहे थे। ऐसा लग रहा था जैसे उसके शरीर में बिजली की लहर दौड़ गई हो। साँप अपनी चमकती आँखों से इधर-उधर देख रहा था। लेकिन लोगों की बेचैनी बढ़ती जा रही थी। उन्हें डर का एहसास तक नहीं हो रहा था।

23

तभी साँप ने ज़ोर से अपनी पूंछ ज़मीन पर पटकी। उसके आस-पास की धूल उड़ गई। पूंछ के सिरे के नीचे एक गड्ढा बन गया, और भीड़ भी पीछे हट गई। साँप की तरफ़ आकर्षण बढ़ गया। लेकिन डर बिल्कुल नहीं था।

उस समय सपेरा ने जहाँ वह बैठा था, वहाँ से साँप को डाँटा, “बैठ जाओ बेटा, बैठ जाओ।” उनका मन किया कि साँप के शरीर पर हाथ फेरें। साँप ने गुस्से में उनके हाथ पर फन रख दिया।

सपेरा ने अपने होंठ भींचे और फिर से नाक सिकोड़ी, जैसे वह उसे चूमना चाहता हो।

साँप ने अपना गुस्सा दबा लिया। वह गुस्से में उठा। उसे एहसास हुआ कि लोग उसका डर भूल गए हैं। वे उसका मज़ाक उड़ा रहे थे, उसकी चमक तो बस उनकी आँखों में उसका दिखना था। उसका गुस्सा उन्हें खुश कर रहा था। उसकी बेइज्ज़ती उन्हें खुशी दे रही थी।

24

सपेरा ने हल्के से उसके शरीर पर हाथ फेरते हुए कहा,

"अरे बेटा, बस, बस बेटा."

साँप ने सपेरा के हाथ पर अपने दाँत मारे। सपेरा उसके हाथ से बहता खून देखकर हँसा। उसने खून पोंछा। उसने शांति से साँप को डाँटा, "इतना

गुस्सा मत हो बेटा, शाबाश, शाबाश।"

फिर साँप सिकुड़कर ज़मीन पर बैठ गया। उसकी बेवकूफ़ी उसे परेशान करने लगी। उसका घमंड टूट गया ।

वह लड़ाई में हार गया। वह मुंह ढके लेटा रहा। एक ने कहा, "सपेरे बुवा, क्या तुम्हें लगता है कि तुमने उसके ज़हरीले दांत निकाल दिए हैं?"

सपेरे ने कहा, "नहीं दादा, इस पर भरोसा मत करो। हमारे पास दवा वाले

पौधे हैं," और उसने सांप के काटने पर कुछ पत्ते रगड़े।

दूसरे आदमी ने पूछा, "क्या आपको लगता है कि यह बहुत ज़हरीला है?"

सपेरे ने कहा, "बाबूजी, इसके काटने का दुनिया में कोई इलाज नहीं है। यह बहुत खतरनाक जहरीला साँप है।"

साँप ने अपना मुँह अपनी पूंछ में छिपा लिया था।

तीसरे आदमी ने कहा, "सपेरे बुवा, यह अभी भी बैठा है। चलो इसे फिर से खड़ा करते हैं।"

सपेरा ने अपने पंजे की नोक से साँप की पूंछ पर कई बार मारा। साँप गुस्से से काँपने लगा। लेकिन वह चुपचाप वहीं पड़ा रहा। वह उठा नहीं।

सपेरा ने फिर प्रहार किया और कहा, "उठो बेटा।"

हाँ, ऐसा ही था। साँप गुस्से में उसे ज़ोर से काटने लगा।

सपेरा ने उसके माथे पर फिर वार किया और धीरे से कहा, "उठो बेटा।"

और वह बेटा उठकर आया ? जैसे कि वह अब और बर्दाश्त नहीं कर सकता था, वह उठ गया। वह उठा और अपने पंख फिर से फैला दिए। उसने अपने फन चारों तरफ़ घुमाए। उसने एक फुफकार मारी। उसने अपनी ज़बान बाहर निकाली। उसने अपना शरीर अकड़ा लिया। वह अकड़ा। उसने वही गुस्सा दिखाया। क्योंकि तमसागिरी को यही उम्मीद थी। और यही उसकी ज़िद भी थी।

लोगों को बहुत मज़ा आया। साँप का लोगों पर अच्छा असर हुआ। लोगों को पता चला कि यह सच में बहुत ज़हरीला साँप था। उन्हें इतनी खुशी हुई कि वे एक महान आदमी को देख रहे हैं लेकिन उसकी महानता का

उन पर कोई असर नहीं होने देना चाहिए। इस खुशी के साथ, उन्होंने साँप की महानता को मान लिया।

साँप ने सब कुछ किया। और फिर वह सिकुड़ गया, अपना मुँह अपनी पूंछ में दबा लिया, और वहीं लेट गया।
उस पल, एक दर्शक उसे हिलते हुए देखना चाहता था।

उसने कहा , "चलो देखते हैं कि साँप को चलते हुए देखना कितना सुंदर होता है।"

सपेरे ने कहा, “ठीक है, बाबूजी।”

और सपेरे ने साँप को लालच देते हुए कहा, "बस थोड़ा सा चलो, राजा, चलो बाबूजी को खुश करते हैं। तुम्हें बड़ा इनाम मिलेगा।"

साँप को शायद बड़ा इनाम पाने की चाहत समझ नहीं आई, वह बस बेजान चीज़ की तरह पड़ा रहा, जैसे उस पर हमला हो रहा हो। थोड़ी देर बाद साँप को बाबूजी को खुश करने का फ़ायदा समझ में आ गया होगा। उसने अपनी उलझनें सुलझा लीं। धीरे-धीरे वह सरपट दौड़ने लगा। सपेरा ने पुंगी को फन के पास ले जाकर कहा, "बाबू, लोगों को नमस्ते करो, नमस्ते करो, बेटा।" साँप ने फन को ऊपर उठा लिया।

थोड़ी दूर सरपट दौड़ने के बाद, साँप फिर से सिकुड़कर बैठने लगा। सपेरा ने उसकी बहुत तारीफ़ की। उन्होंने उसे दोनों हाथों से उठाया और लोगों के सामने अखाड़े में ले आए। वह गुर्राया और बोला:

"दाता, सबका भला करे!"

29

किसान दादा की गलती

एक बार बारिश शुरू हो गई। किसान दादा अपने बैल और हल लेकर खेत में गए। वह अपने साथ रोटी ले गए। खेत में पहुँचने के बाद

उसने अपना हल जोड़ा। उसने रोटी की पोटली को एक पेड़ के नीचे रख दिया। फिर वह काम करने लगा। दो बजे बैल काम करते-करते थक गए। उसके पेट में भी कौवे काँव-काँव करने लगे। उसने बैलों को चरने दिया और हल एक तरफ रख दिया।

उसने रोटी रखने के लिए हाथ बढ़ाया क्या देखते है ? अरे! रोटी कहाँ गई? उसने इधर उधर देखा । लेकिन रोटी कहीं नहीं दिखी। यह क्या

है,जादू ? किसान को कुछ समझ नहीं आया।

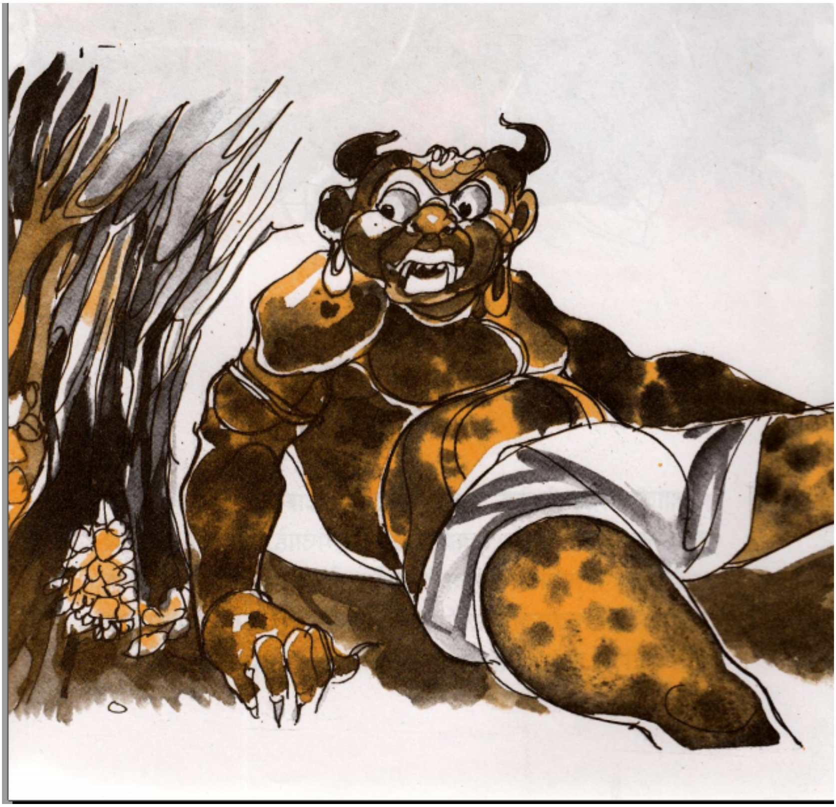

वह हैरान था। ऐसा क्या हुआ कि मैंने उसे नहीं देखा? ज़रूर कोई आया होगा और रोटी ले गया होगा।

सच में पापी राक्षस का एक नौकर था। जब किसान काम पर था, तब उसने रोटी चुरा ली थी। वह अभी भी वहीं था, एक पेड़ के पीछे छिपा हुआ। उसने सोचा कि किसान अब रोएगा,

गाली देगा। किसान यह देखकर दुखी हुआ कि रोटी चली गई। फिर उसने सोचा, अब रोने से क्या होगा? आखिर, अगर हम रोटी नहीं खाएंगे, तो क्या हम भूखे मर जाएंगे, है ना? इसके अलावा, जिसने रोटी ली है, उसे इसकी ज़रूरत होगी। जाने दो, जो भी हो, यह सोचकर वह कुएं के पास गया।

उसने जी भरकर पानी पिया। वह अपने हाथ-पैर फैला कर लिए लेट गया। उसने थोड़ी पलकें झपकाईं। फिर उसने अपने बैल लिए और खेत जोतना शुरू कर दिया।

यह देखकर नौकर शर्मिंदा हो गया। उसने सोचा कि किसान गुस्सा होकर उसे गाली देगा। लेकिन उसके मुंह से कोई शब्द नहीं निकला।

फिर उसने अपने मालिक, राक्षस को यह खबर बताई। उसने उससे कहा, "मैंने किसान की रोटी चुराई थी। लेकिन उसने मुझे गाली नहीं दी। इसके बजाय, उसने कहा, 'जिसने रोटी ली है, उसे आशीर्वाद मिले।'"

यह सुनकर राक्षस को बहुत गुस्सा आया। उसने कहा, "एक इंसान ने तुम्हें हरा दिया है। तुम्हें खुद पर शर्म आनी चाहिए। तुम अपना काम बिल्कुल नहीं कर पा रहे हो। अगर इंसान इतना ईमानदार हो गया, तो तुम लोगों का क्या होगा ? राक्षस कुल का क्या होगा? हमारी महानता कैसे बची रहेगी? तुरंत वापस जाओ और जैसा मैं कहूँ वैसा करो। तुम्हें तीन साल के अंदर उस किसान को सज़ा देनी होगी। नहीं तो तुम्हें नर्क में फेंक दिया जाएगा। समझे? अभी जाओ। चलो।"

नौकर इस धमकी से डरकर खेत पर लौट आया। वह सोचने लगा कि उसे क्या करना चाहिए? उसने बहुत देर तक सोचा। आखिरकार, उसे एक प्लान सूझा।

37

उसने मज़दूर का भेष बदलकर किसान के साथ काम कर लिया। पहले साल उसने कहा कि इस साल वह दलदली ज़मीन में बोएगा। किसान ने

उसकी बात सुनी और वैसा ही किया। किस्मत से उस साल बहुत ज़्यादा सूखा पड़ा। गर्मी और पानी की कमी से सबकी फ़सलें जल गईं। लेकिन किसान के खेत में बंपर फ़सल हुई। बालियों में दाने भी बड़े-बड़े आए।

फसल कट चुकी थी। फसल इतनी ज़्यादा थी कि न सिर्फ़ इस साल की फसल पूरी हो गई थी, बल्कि अगले साल के लिए खलिहान भी भर गए थे।

अगले साल, नौकर ने सलाह दी कि इस साल हमें पहाड़ी ज़मीन पर बोना चाहिए। तो उसने वहीं बोया। और इतनी बारिश हुई कि कहना नामुमकिन हो गया। दूसरों की फ़सल खराब हो गई, सड़ गई, और बालियों में दाना नहीं था। लेकिन इस नौकर के मालिक, उस किसान के पहाड़ी पर खेत में, अनाज की बालियाँ लहरा रही थीं। खलिहान भर गए थे। इतना कि उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या करे।

फिर नौकर ने अपने मालिक को सुझाव दिया कि इन अनाजों से शराब बनाई जा सकती है। मैं क्या कह सकता हूँ, शराब ऐसी चीज़ है, इसकी तुलना किसी चीज़ से नहीं की जा सकती।

39

किसान ने ठीक वैसा ही किया। उसने तेज़ शराब बनाई। खुद पी, दोस्तों को पिलाई, और यह सब करने के बाद, नौकर अपने राक्षस भगवान के पास आया। उसने कहा, "साहब, मुझे सफलता मिल गई है। और मेरा काम पूरा हो गया है।"

राक्षस ने कहा, "ठीक है, मैं आकर देखता हूँ कि तुमने क्या किया है।" राक्षस और उसका नौकर दोनों किसान के पास आए। और देखो, पड़ोस के बाज़ार के अमीर किसानों को भी वहाँ बुलाया गया है और शराब की दावत चल रही है। ऐसा लग रहा है जैसे कोई त्योहार मनाया जा रहा हो! किसान की पत्नी मेहमानों को 'साकी' के तौर पर शराब परोस रही है।

इसी बीच पत्नी किसी से टकराकर लड़खड़ा गई और उसके हाथ से शराब गिर गई। इस पर उसके पति ने अचानक कहा, "अरे तुम कितनी लापरवाह हो। इस दुर्लभ ड्रिंक को तुम क्या समझती हो? तुम घूम-घूमकर खुद शराब पीला रही हो। तुम कितनी बेशर्म, बेशर्म हो।"

नौकर ने धीरे से अपने मालिक की तरफ इशारा किया, "देखो, देखो। यह वही आदमी है। भले ही उसके मुंह से रोटी का निवाला निकाल लिया गया था, लेकिन वह बिल्कुल भी गुस्सा नहीं हुया था।" किसान ने अपनी पत्नी को एक तरफ धकेल दिया। फिर भी, वह लोगों को कप में शराब डालता रहा, उसे डांटता रहा।

इसी बीच, एक गरीब मज़दूर काम से घर लौटते हुए वहाँ आया। उसे दावत में नहीं बुलाया गया था। लेकिन उसने सबको अपने घर बुलाया था ।

41

"राम राम मालिक " कहा और वे वहीं बैठ गए। बेचारा आदमी बहुत थका हुआ था। सबको शराब पीते देखकर उसने भी सोचा कि उसे भी एक घूंट पीना चाहिए। बेचारा आदमी वहीं बैठा रहा। उसके मुँह में पानी आ रहा था। लेकिन मेज़बान किसान बेवकूफ़ था।

42

उसने उसे पूछा भी नहीं। उसने कहा, "ऐसे आने वाले हर एक आदमी के लिए शराब कहाँ से लाऊँ? तुम ही बताओ।"

दुष्ट राक्षस यह सब देखकर बहुत खुश हुआ।

43

 "और क्या होता है, बस देखते रहो। क्या पता, और क्या बाकी है?"

अंदर और बाहर, सभी ने बहुत शराब पी । पहले राउंड में, सभी ने एक-दूसरे से प्यारे तरीके से बात करना शुरू किया। फ्रेंडली बातें।

यह सुनकर राक्षस बहुत खुश हुआ और उसने नौकर की पीठ थपथपाई।

उसने कहा, "देखो शराब की वजह से मेरे मन में लोमड़ी जैसा धोखा कैसे आ गया है। अगर इस चीज़ में लोगों को धोखा देने की ताकत है, तो और

क्या चाहिए? इसे हमारी जीत समझो।" नौकर ने कहा, "देखते रहो। अब वे लोमड़ियों की तरह एक-दूसरे पर पूंछ हिला रहे हैं और जाल फेंक रहे हैं। देखो शराब का हर गिलास उन्हें खूंखार जंगली भेड़ियों में बदल देगा या नहीं।"

फिर सबने एक और दौर चलाया । इसके बाद उनकी बातचीत बदतमीज़ी वाली हो गई। अब वे एक-दूसरे को गाली देने लगे। गाली-गलौज शुरू हुई और यह लड़ाई में बदल गई। जल्द ही सब आपस में लड़ने लगे। किसान भी इसमें शामिल हो गया। उनमें लड़ाई हो गई।

राक्षस इन सभी चमत्कारों से बहुत खुश हुआ। उसने नौकर से कहा, "तुमने यह बहुत अच्छा किया। मैं तुमसे बहुत खुश हूँ।"

लेकिन नौकर ने कहा, "अभी और देखना बाकी है। बाद में, हम और भी भयानक सीन देखेंगे। अभी वे भूखे भेड़ियों की तरह लड़ रहे हैं। एक और दौर के बाद, सूअर सूअर बन जाएंगे!"

फिर तीसरा दौर शुरू हुआ। अब सूअरों और उनमें क्या फ़र्क था? वे चीख

रहे थे, चीख रहे थे, चीख रहे थे, चीख रहे थे। कोई किसी की नहीं सुन रहा था। उन्हें काबू में करना मुश्किल हो रहा था। वे एक-दूसरे के ऊपर गिर रहे थे।

यह इस तरह दिखने लगा. सब पीते रहे ।.

फिर सब तितर-बितर हो गया। लोग, एक-एक करके, जूझते हुए, गिरते हुए, गलियों से होते हुए उस जगह से निकल गए। नौकर का मालिक, जो मेहमानों को अलविदा कहने के लिए बाहर आया था, कीचड़ में औंधे मुँह गिर गया। वह वहीं पड़ा रहा, उसके सारे हाथ-पैर कीचड़ से सने हुए थे, और वह सुअर की तरह गुर्रा रहा था।

यह सब देखकर शैतान अपने नौकर से बहुत खुश हुआ। उसने कहा, "शाबाश, तुमने बहुत अच्छी चीज़ बनाई है। तुम्हारी पहली गलती अब माफ़ हो गई। लेकिन मुझे बताओ, तुमने यह चीज़ कैसे बनाई? पहले तुमने इसमें लोमड़ी का खून मिलाया होगा। इसीलिए लोमड़ी का धोखा पीने वालों तक पहुँचा। फिर तुमने इसमें भेड़िये का दूध मिलाया होगा। इसीलिए यह भेड़िये जैसा खूंखार और बेरहम लग रहा था। और आखिर में सूअर का खून मिलाया होगा। इसीलिए यह सूअर की तरह चीखने और गुर्राने लगा।"

नौकर ने कहा, "अरे, अरे! इसकी कोई ज़रूरत नहीं थी। मैंने तो सिर्फ़ इसलिए ऐसा किया ताकि किसान को ज़रूरत से ज़्यादा मिल जाए। जानवर का खून इंसान में होता है। जब तक उसके पास खाने के लिए काफ़ी नहीं खाना होता है, उसका असर दबा रहता है। किसान के साथ यही हुआ। पहले उसके मुँह से रोटी छीन ली गई थी। फिर भी वह गुस्सा नहीं हुया ।

ज़ाहिर है, वह मज़े करना चाहता था। तो, फिर क्या? मैंने उसे मज़े का रास्ता दिखाया - शराब! उसने मज़े के लिए भगवान की दी हुई दुर्लभ चीज़ों से शराब बनाना शुरू कर दिया। फिर उसमें लोमड़ी, भेड़िये और सुअर, सभी के गुण आने लगे। अगर कोई आदमी शराब पीता रहेगा, तो वह पक्का जानवर बन जाएगा।"

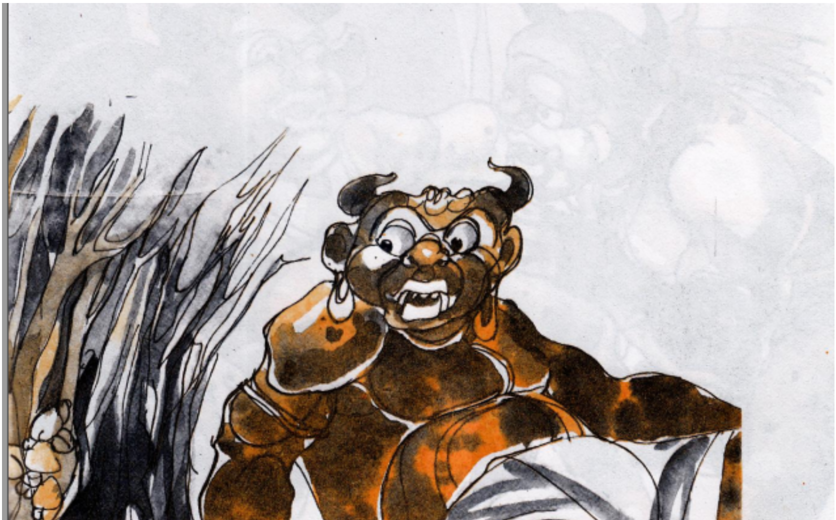

राक्षस ने नौकर की तारीफ़ की, उसकी पहली गलती माफ़ कर दी, और उसकी मेहनत के लिए उसे अपनी नौकरी में ऊँचा पद दिया।

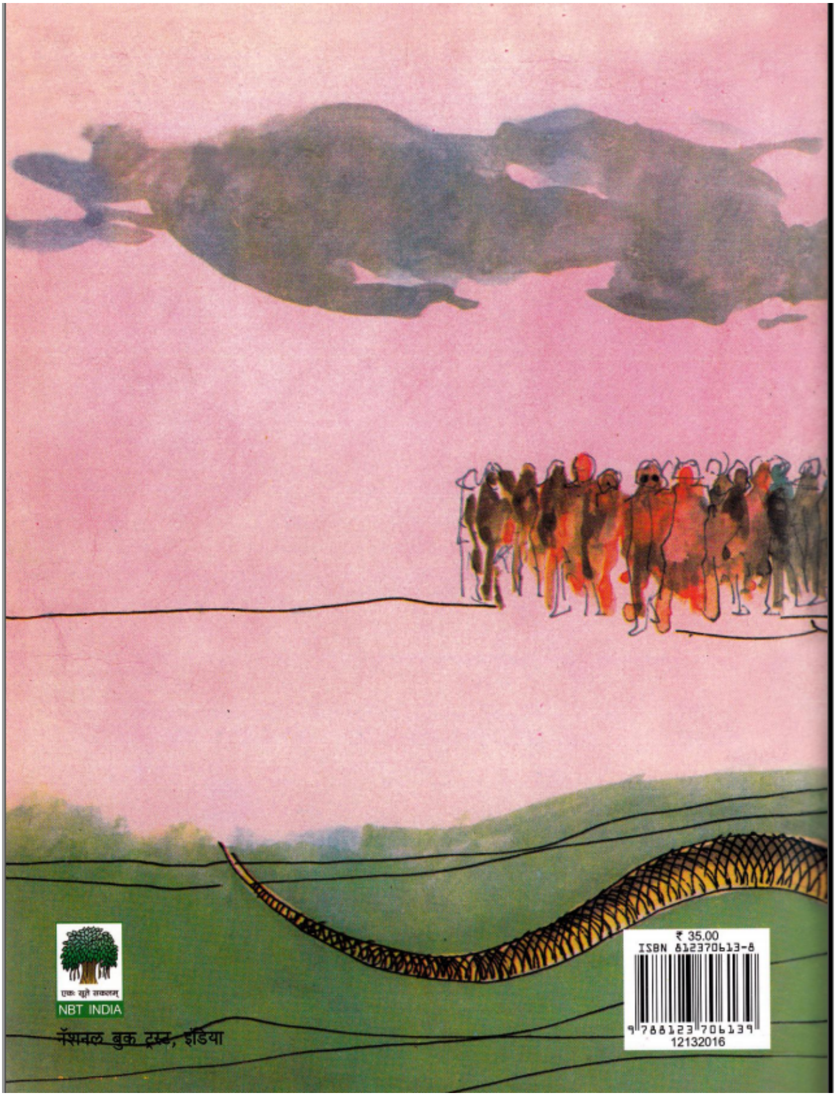

एकः सूते सकलम्
NBT INDIA
नॅशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
₹ 35.00
ISBN 812370613-8
9788123706139
12132016